# मनसा सेवा - 63

**(Spreading 7 virtues through organs)**

**अव्यक्त बापदादा :-** (13/11/1997)

➳ _ ➳ बंगाल-बिहार का सेवा का टर्न है। तो बंगाल-बिहार ने 9 लाख तैयार किया है? चुप हैं, बोलते नहीं हैं। चलो एक ज़ोन नहीं, सभी ज़ोन ने, देश विदेश वालों ने मिलकर 9 लाख तैयार किये हैं? विदेश वाले बताओ। 9 लाख हैं? बापदादा तो अपनी डेट फिक्स करते हैं और उसी फिक्स डेट पर आते हैं। आप भी सब बातों की डेट फिक्स करते हो? यह हाल कब तक बनेगा, फंक्शन कब होगा, यह डेट फिक्स करते हो ना? तो इसकी डेट कौन सी है? फिक्स है? विनाश के इन्ड (अन्त) में या पहले? क्या होगा? क्या सोचा है? कौन सी डेट है? कोई डेट है या अभी फिक्स नहीं किया है? यह भी बाप करे। करना आपको है।

➳ _ ➳ बापदादा तो कहेंगे कि शुभ कार्य में देरी नहीं करो फिर क्या करेंगे? चलो, इस सीजन के इन्ड में हो जाए तो भी अच्छा। इतनी हिम्मत है? सिर्फ दाता बन जाओ। अगर दाता बनेंगे तो दाता की भावना से आपकी रॉयल फैमिली और समीप वाली प्रजा बहुत जल्दी बनेंगी। वह लोग तो इन्तजार कर रहे हैं, सिर्फ सदा दाता बनने की देरी है। महान सहयोगी बनने की देरी है। ज्यादा खजाना स्वयं प्रति वा सिर्फ स्वयं की सेवाओं के प्रति लगाते हो। अपने-अपने सेवाओं के ड्युटीज़ में ज्यादा समय लगाते हो। महान दाता बन, बेहद के दाता बन वर्ल्ड के गोले पर खड़े हो, बेहद की सेवा में वायब्रेशन फैलाओ।

➳ _ ➳ विश्व राजा बनना है सिर्फ ज़ोन के वा अपने-अपने ड्युटीज़ के सर्किल के राजा नहीं बनना है। विश्व कल्याणकारी हो। अभी बेहद में जाओ। बेहद में जाने से हदों की बातें स्वत: ही समाप्त हो जायेंगी। मनोबल बहुत श्रेष्ठ बल है, उसको यूज़ नहीं करते हो। वाणी, संबंध, सम्पर्क उससे सेवा में बिजी रहते हो। अब मनोबल को बढ़ाओ। बेहद की सेवा जो अभी आप वाणी या संबंध, सहयोग से करते हो, वह मनोबल से करो। तो मनोबल की बेहद की सेवा अगर आपने बेहद की वृत्ति से, मनोबल द्वारा विश्व के गोले के ऊपर ऊंचा स्थित हो, वाष्प के साथ परमधाम की स्थिति में स्थित हो थोड़ा समय भी यह सेवा की तो आपको उसकी प्रालब्ध कई गुणा ज्यादा मिलेगी।

---

➢➢ बेहद के दाता बन वर्ल्ड के गोले पर खड़े हो, बेहद की सेवा में वायब्रेशन फैलाना

➳ _ ➳ स्थूल शरीर को छोडकर, आत्मा सूक्ष्म शरीर के साथ उडना

➳ _ ➳ फ़रिश्ता स्वरुप, अन्तःवाहक शरीर में, लाइट के कार्ब में ग्लोब पर स्थित हो जाना

➳ _ ➳ 7 चीजों से 7 काम- आँखें, मस्तक, मुख, सूक्ष्म देह, पैर, हाथ

➳ _ ➳ **एक साथ संगठित रूप में योग का प्रयोग करने से वायब्रेशन शक्तिशाली हो जाते हैं**

→ **पैरों** से **पवित्रता** की किरणें निकलकर सम्पूर्ण **धरती** पर जा रही है, सम्पूर्ण ग्लोब पर जा रही हैं

- धरती जो पतित बन चुकी है पावन बन रही है
- धरती पर चलते हुए भी पवित्रता की किरणें निकल रही है
- **जहाँ-जहाँ ब्रह्मा बाबा के कदम हैं वहां मेरे कदम पड़ते जा रहे हैं, आलरेडी उनके footprints हैं उन पर मेरे कदम पड़ रहे हैं**

- दौड़ लगाते हुए- संसार की सारी आत्माएं लक्ष्य तक पहुँचने के लिए मेरे पीछे भाग रही है

→ मेरे **अंग-अंग** से **सुख** की किरणें निकल रही है और सारे **वायुमंडल** में फ़ैल रही हैं

- वायुमंडल जो दुःख, विषाद, अवसाद का है उसमें सुख फ़ैल रहा है

→ मेरे **हाथों** से **शांति** की किरणें निकल रही है और सारे **अंतरिक्ष** में जा रही है, सारे ग्रह, सारे नक्षत्र, आकाश, सूरज, चाँद, सितारे शांत हो रहे हैं

- विराट रूप- हजार हाथों से शांति की किरणें निकल रही है

→ मेरे **मस्तक** से **ज्ञान** की किरणें निकल रही है और **अग्नि** को जा रही है,

- इस ज्ञान अग्नि से वह अग्नि शांत हो रही है

→ मेरे **नैनों** से **आनंद** की किरणें निकल रही है और **जल** में जा रही है

- आनंद की लहरें सागर की लहरों में, जल में समां रही है

→ **मुख** से **शक्तियुक्त बोल**, आत्माओं का आह्वान, **आत्माओं** से रूह-रिहान करना

- हे- देवकुल की आत्माओं, जागो, आ जाओ,
- **एक-एक बोल साधारण नहीं है, उसमें परमात्म शक्ति समाई हुई है**
- उन बोल में सम्पूर्ण पवित्रता की शक्ति है
- **ब्राह्मणों के मुख से निकले हुए शब्द आत्माओं के लिए वरदान बन जायेंगे**
- बोल के साथ आत्माओं में शक्ति भी भरना है

→ **मुझ आत्मा से परमात्म प्रेम की किरणें चारों ओर फ़ैल रही है**

- मैं प्रेम स्वरुप आत्मा हूँ तो मुझसे प्रेम की किरणें चारों ओर, दसों दिशाओं, 14 भुवन में फ़ैल रही है
- हर आत्मा में ईश्वरीय प्रेम जाग्रत हो रहा है

➳ _ ➳ **बेहद के सहयोगी बनना है, जिसको हम सहयोग दें उससे कुछ भी अपेक्षा ना करें**

→ **दाता बनना अर्थात लेने की कामना नहीं**

→ हर कर्म निस्वार्थ करना है

→ कोई नाम, मान की कामना नहीं

→ ये सब साइड सीन्स हैं

→ **जो आज स्तुति कर रहे हैं वो कल निंदा भी कर सकते हैं**

→ **हमें अपने आप की सूक्ष्म स्टडी करनी है**